ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–58
दिनांक– मंगलवार, 05 अगस्त, 2025

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 32.0 एवं 24.6 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 98 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 96 प्रतिशत, हवा की औसत गति 4.0 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 1.0 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 4.0 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 29.3 एवं दोपहर में 31.5 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में 159.4 मि0मी0 वर्षा हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(06–10 अगस्त, 2025)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 06–10 अगस्त, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के से मध्यम बादल छाये रह सकते हैं। इस अवधि में उत्तर बिहार जिलों में कही कही हलकी वर्षा हो सकती है, एक दो स्थानों पर मध्यम वर्षा हो सकती है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 34–36 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। न्यूनतम तापमान 25–27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 40 से 45 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 12 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने का अनुमान है।

समसामयिक सुझाव

- उत्तर बिहार में पिछले कुछ दिनों में बर्षा हुई है, वर्षा जल का लाभ उठाते हुए किसान धान की रोपाई प्राथमिकता के आधार पर करें। रोपे हुए धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दें। धान की खड़ी फसल में कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
- विगत दिनों में उत्तर बिहार में बर्षा हुई है, जिसके कारण खेतों में जल जमाव की स्थिति बन गई है। किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि अरहर, हल्दी, ओल, सुर्यमुखी एवं मक्का की खड़ी फसलों तथा सब्जियों की नर्सरी में जमा हुए अधिक वर्षा जल के निकासी की व्यवस्था करें। कद्दुवर्गीय सब्जियों को उपर चढ़ाने की व्यवस्था करें ताकि वर्षा से सब्जियों की लत्तर को गलने से बचाया जा सके।
- खरीफ मक्का की फसल में कीट–व्याधियों एवं फफूंदी धब्बों की निगरानी करतें रहें। कीट अथवा रोग की उपस्थिती में उपचार हेतु अनुशंसित दवा का छिड़काव करे। मक्का की 30–35 दिनों वाली फसल में बछनी कर 40 किलोग्राम नेत्रजन का व्यवहार करें। खड़ी फसलों एवं नर्सरी में कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
- बैगन की फसल में तना एवं फल छेदक कीट की शुरुवाती रोक–थाम के लिए बैगन की रोपाई के 10 दिनों बाद 1 ग्राम फ्युराडान 3 जी0 दानेदार दवा प्रति पौधा की दर से जड़ के पास मिट्टी में मिला दें।
- इस मौसम में लत्तर वाली सब्जियों जैसे नेनुआ, करैला, लौकी, और खीरा में फल मक्खीयों से होने वाले नुकसान में बढ़ोत्तरी हो जाती है। सर्वप्रथम फल मक्खी से क्षतिग्रस्त सब्जियो की तुराई कर गड्ढे में दवा दे। इससे बचाव हेतु मिथाइल यूजीनोल ट्रेप का प्रयोग करें।
- जिन किसान भाई का प्याज का पौध 45–50 दिनों का हो गया हो वे पँक्ति से पँक्ति की दूरी 15 से0मी0, पौध से पौध की दूरी 10 से0मी0 पर रोपाई करें। खेत की तैयारी के समय 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद, 60 किलोग्राम नेत्रजन, 80 किलोग्राम स्फुर एवं 80 किलोग्राम पोटाश के साथ 20 किलोगाम सल्फर का व्यवहार करें। प्याज के पौध की रोपाई के लिए खेतो को समतल कर छोटी–छोटी उथली क्यारियाँ बनावें, जिसकी चौड़ाई 2 मीटर एवं लम्बाई 3 से 5 मीटर तक रख सकते हैं। प्रत्येक दो क्यारियो के बीच जल निकास हेतु नालियाँ अवश्य बनावें।
- परवल की राजेन्द्र परवल–1, राजेन्द्र परवल–2, एफ0पी0 1, एफ0पी0 3, स्वर्ण रेखा, स्वर्ण अलौकिक, आई0आई0भी0आर0–1,2,105 किस्मों की रोपनी करें। बीज दर 2500 गुच्छियाँ प्रति हेक्टेयर तथा लगाने की दूरी 2 × 2 मीटर रखें। परवल की रोपाई के लिए प्रति गड्ढा कम्पोस्ट 3 से 5 किलो ग्राम, नीम या अंडी की खल्ली 250 ग्राम, एस0एस0पी0 100 ग्राम, म्यूरेट ऑफ पोटाश 25 ग्राम एवं थिमेट 10 से 15 ग्राम का व्यवहार करें। परवल के अच्छे फलन के लिए 5 प्रतिशत नर पौधे की रोपाई अवश्य करें।
- फूलगोभी की मध्यकालीन किस्में अगहनी, पूसी, पटना मेन, पूसा सिन्थेटिक–1, पूसा शुभ्रा, पूसा शरद, पूसा मेघना, काशी कुवाँरी एवं अर्ली स्नोबॉल किस्मों की बुआई नर्सरी में करें। उपचारित बीज उथली क्यारियों मे पंक्तियों में गिराये।
- हल्दी, अदरक, ओल और बिगत माह बोयी गई बरसाती सब्जियों में आवश्यकतानुसार निकाई–गुड़ाई करें। इन फसलों में कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
- पपीता की नर्सरी उथली क्यारियों (10–15 सेन्टी मीटर ऊँची) में बोयें। इसके लिए उन्नत प्रभेद पूसा ड्वार्फ, पूसा नन्हा, पूसा डीलीसीयस, सी0ओ0– 07, सुर्या एवं रेड लेडी है। बीजदर 300–350 ग्राम प्रति हेक्टेयर रखें। बीज को बैविस्टन 2 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से उपचारित कर क्यारियों में 07–10 सेन्टीमीटर की दूरी पर बोयें।
- फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का यह समय अनुकुल चल रहा है। किसान भाई अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जुन माह में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, तैमूरिया, अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिष्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाशंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगड़ा राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दूरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधों को 2.5 × 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकतें हैं।

आज का अधिकतम तापमानः 33.2 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0॰4 डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमानः 24.5 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.7 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी